नौकरशाह केवल बौद्धिक कार्य करते हैं। इस प्रकार श्रम के बँटवारे के नाम पर परिश्रम का सारा भार मजदूरों के सिर पर लाद दिया जाता है, जबकि इसके परिणामस्वरूप जो उत्पादन बढ़ता है उसका लाभ मालिकों को मिलता है। इस लाभ का कुछ हिस्सा वे नौकरशाहों को भी देते हैं इसलिए नौकरशाहों को मोटे वेतन तथा भरपूर सुविधायें उपलब्ध करायी जाती हैं। **मार्क्स** के शब्दों में, "नौकरशाहों को उनके उत्पादक कार्य के लिए वेतन नहीं दिया जाता बल्कि वे श्रमिकों के शोषण का पुरस्कार पाते हैं। श्रम-विभाजन में प्रत्येक दृष्टिकोण से श्रमिक ही घाटे में रहते हैं।"

2. **पद सोपान परम्परा** (Hierarchy Tradition) – मॉर्क्स के मतानुसार पद सोपान व्यवस्था में अनेक बुराइयां हैं। जब कोई अधिकारी किसी आम जनता से शोषणपूर्ण और नकारात्मक व्यवहार करता है तो उसके ऊपर के अधिकारी की प्रवृत्ति उसका बचाव करने की होती है। परन्तु दूसरी ओर जब कोई अधिकारी अपने उच्च अधिकारी की गलती का विरोध करता है तो उसे दण्डित किया जाता है। मार्क्स यह भी कहता है कि पद सोपान व्यवस्था में उच्च और निम्न अधिकारी दोनों एक-दूसरे की आँखों में धूल झोंकते हैं। उच्च अधिकारी किसी समस्या की बारीकियों को समझने के लिए जिम्मेदारी निचले अधिकारी पर छोड़ देते हैं, जबकि निचले अधिकारी यह कार्य उच्च अधिकारी का मानते हैं। कार्य की असफलता का उत्तरदायित्व उच्च अधिकारी निम्न अधिकारी पर डालते हुए कहते हैं कि नीति तो अच्छी बनायी थी, परन्तु उसका कार्यान्वयन उचित ढंग से नहीं हुआ, दूसरी ओर निम्न अधिकारी असफलता के लिए उच्च अधिकारी को दोषी ठहराता हुआ कहता है कि नीति का निर्माण ही गलत था।

3. **स्वतन्त्रता का ह्रास** (Decline of Liberty) – मार्क्स मानता है कि नौकरशाही के कारण स्वतन्त्रता का ह्रास होता है। श्रमिकों को अपनी आजीविका चलाने के लिए नौकरी का सहारा लेना पड़ता है, क्योंकि स्वतन्त्र कारीगर के रूप में कार्य करना उनके लिए सम्भव नहीं रहता। उनके द्वारा निर्मित वस्तुओं के लागत खर्च एवं गुणवत्ता कारखाने द्वारा उत्पादित वस्तुओं की तुलना में अपना अस्तित्व नहीं बनाये रख सकते। कारखाने में भर्ती हो जाने के पश्चात् उन्हें प्रबन्धकों के तानाशाही नियन्त्रण में कार्य करना पड़ता है। दूसरी ओर नौकरशाह अपने को श्रेष्ठ, उच्च स्तरीय मानते हैं, इसलिए मजदूर और नौकरशाह दोनों ही अलगाव की भावना से ग्रसित रहते हैं।

4. **सृजनात्मकता का ह्रास** (Decline of Creativity) – मार्क्स के अनुसार नौकरशाही मजदूर की सृजनात्मकता का ह्रास करती है, जिसे कभी-कभी दुष्क्रिया कह दिया जाता है। श्रम विभाजन के कारण कोई भी कर्मचारी अपने पूरे सामर्थ्य का उपयोग नहीं कर पाता है। वह कभी भी अपने श्रम से पूरी वस्तु का निर्माण नहीं कर पाता है। इसलिए उसे पूर्ण सन्तोष नहीं मिल पाता है। इसमें श्रमिक या कर्मचारी एक औजार मात्र बनकर रह जाता है।

5. **नैतिक मूल्यों का ह्रास** (Decline of Moral Values) – मार्क्स की मान्यता है कि जिन संगठनों में नौकरशाही की जड़ें गहरी जम चुकी हैं वहाँ संगठन के कर्मचारियों के नैतिक मूल्य में भी गिरावट आ जाती है। नौकरशाही व्यवस्था में उच्च अधिकारी निम्न अधिकारियों से रिश्वत लेते हैं, निम्न अधिकारियों के साथ शोषणपूर्ण व्यवहार करते हैं, उनकी समस्याओं और परिस्थितियों को अनदेखा करते हैं। उनकी कल्याणकारी योजनाओं में अड़ंगा लगाते हैं।

6. **मानवीय मूल्यों का ह्रास** (Decline of Human Values) – मार्क्स के मतानुसार नौकरशाही से मानवीय मूल्यों का भी ह्रास होता है। बड़े-बड़े कारखानों में श्रमिकों से मशीनों की भाँति कार्य कराये जाते हैं और स्थिति यह हो जाती है कि वे यन्त्रवत् मशीन का पुर्जा बनकर रह जाते हैं। श्रमिक की मानवीय भावनाओं, प्रेरणा, सहयोग, उत्साह, आशा, निराशा के लिए कोई स्थान शेष नहीं रह जाता है।

नौकरशाही पर मोस्का के विचार (Views of Mosca on Bureaucracy) – मोस्का ने राजनीतिक अभिजन के सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए नौकरशाही की व्याख्या की है। उसके अनुसार नौकरशाही का शासन 'अल्पसंख्यक वर्ग' के शासन को साक्ष्य प्रदान करता है। नौकरशाही अफसरों द्वारा जितनी वास्तविक शक्तियों का उपयोग किया जाता है, वे अपने ही ढंग से शक्तिशाली अभिजन वर्ग का निर्माण करते हैं। मोस्का के अनुसार सरकार में दो वर्ग पाये जाते हैं—

Scanned with CamScanner

नौकरशाही की विशेषताएँ : फ्रेडरिक, वेबर द्वारा :

1. **पदसोपान की व्यवस्था**—यह पद्धति पदसोपान के आधार पर गठित होती है। इसमें आदेश ऊपर से नीचे की ओर चलता है तथा उत्तरदायित्व नीचे से ऊपर की ओर चलता है। प्रत्येक अधीनस्थ कर्मचारी अपने उच्च पदाधिकारी के प्रति उत्तरदायी होता है तथा इसी के नियन्त्रण, निर्देशन और पर्यवेक्षण में कार्य करता है। प्रत्येक स्तर के अधिकारियों और कर्मचारियों के अधिकार और कर्तव्य निर्धारित होते हैं। पूरा संगठन एक पिरामिड (Pyramid) के रूप में होता है। इसी से एक उचित मार्ग प्रक्रिया (Through Proper Channel) का निर्माण होता है जिससे प्रशासन का कार्य सुविधाजनक बन जाता है।

2. **निर्धारित कार्यक्षेत्र**—इस व्यवस्था में प्रत्येक अधिकारी का कार्यक्षेत्र नियमों द्वारा निश्चित होता है। अधिकारी उस कार्यक्षेत्र की सीमा से बाहर नहीं जा सकता। निर्धारित कार्यक्षेत्र के अन्दर किसी भी प्रकार की अव्यवस्था, असफलता और भ्रष्टाचार इत्यादि के लिए उसे उत्तरदायी ठहराया जाता है। नौकरशाही में कार्य और उत्तरदायित्व का निर्धारण करके उसका कठोरता से पालन किया जाता है।

3. **नियम और कानून को सर्वोच्च प्राथमिकता**—नौकरशाही व्यवस्था में नियम एवं कानून को सर्वोच्चता दी जाती है। कानून के समक्ष सभी समान होते हैं। समस्त कार्य नियमों के आधार पर किये जाते हैं। इनके कार्यों और निर्णयों पर जनमत, पैरवी और दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।

4. **जीवनयापन और उन्नति का साधन**—नौकरशाही व्यवस्था के सदस्य इसमें जीवनयापन के लिए आते हैं। उनका उद्देश्य मुफ्त समाज सेवा न होकर आजीविका कमाना होता है। इस सेवा में उन्नति करने का भी अवसर मिलता है।

5. **तकनीकी विशेषज्ञता**—आधुनिक नौकरशाही में व्यक्ति एक ही प्रकार का कार्य करते-करते विशेषज्ञ हो जाता है और उस संगठन की समस्याओं, पहलुओं से परिचित हो जाता है।

6. **कुशल एवं योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति**—इस व्यवस्था में केवल कुशल और योग्य व्यक्तियों को रखा जाता है। निर्धारित योग्यता वाले व्यक्तियों को प्रतियोगी और मौखिक परीक्षा के उपरान्त नियुक्त किया जाता है और आवश्यकतानुसार उनको प्रशिक्षण दिया जाता है।

7. **वेतन, भत्ते और पेंशन का अधिकार**—नौकरशाही व्यवस्था में कार्यरत व्यक्तियों को वेतन, विभिन्न प्रकार के भत्ते और सेवानिवृत्त होने पर पेंशन की व्यवस्था होती है।

8. **व्यवस्थित अभिलेख**—इस व्यवस्था में रिकॉर्ड, सरकारी कागज पत्रों, फाइलों पर बहुत अधिक बल दिया जाता है, न जाने कब इनकी आवश्यकता पड़ जाये। समस्त तथ्यों का रिकार्ड रखा जाता है और कागजी प्रमाणों के आधार पर ही कार्यवाही की जाती है।

9. **व्यावसायिक स्वरूप**—इसमें नौकरशाह अपने आपको इसे एक व्यवसाय के रूप में लेते हैं। कर्मचारियों का व्यवहार, आचरण तथा कार्य करने का ढंग पूर्णतः व्यावसायिक हो जाता है।

10. **कर्मचारियों का एक विशिष्ट संगठन**—इसमें कर्मचारियों का संगठन एक विशिष्ट पृथक् शाखा के रूप में किया जाता है। वे कर्मचारी अपने आपको जनता से अलग एक पृथक् वर्ग समझते हैं जिससे वे अपने आपको जनता के प्रति उत्तरदायी नहीं मानते हैं। वे शासन करने और आदेश देने में विश्वास करते हैं।

Stop

नौकरशाही के प्रकार

[TYPES OF BUREAUCRACY]

नौकरशाही के प्रकार अलग-अलग विद्वानों ने अलग-अलग बताये हैं। **फेनसोड** (Fainsod) ने नौकरशाही के पाँच प्रकार गिनाये हैं—

1. प्रतिनिधि नौकरशाही (Representative Bureaucracy),
2. दलीय-राज्य नौकरशाही (Party-state Bureaucracy),
3. शासक-प्रमुख नौकरशाही (Ruler-dominated Bureaucracy),
4. सैनिक-प्रमुख नौकरशाही (Military-dominated Bureaucracy),
5. शासकीय नौकरशाही (Ruling Bureaucracy)।

मैक्स वेबर ने नौकरशाही के तीन प्रकार बताये हैं—

Scanned with CamScanner